

THE OXFORD COLLEGE OF SCIENCE

RAHUL SHUKLA

3rd Sem (BSC) PMCs

19RNS85262

Subject :- Global Warming

Submitting To,

Sukesh Rathod Sir

सामर्थी

<u>Sl. No</u>	<u>Topic</u>
1]	कार्या
2]	घातक परिणाम
3]	जागरूकता
4]	मीन लउस ग्रेस का उत्सर्जन

**Changing Rain
and Snow
Patterns**

**Changes in Animal
Migration and Life Cycles**

**Less
Snow and Ice**

**Higher Temperatures
and More Heat Waves**

**Stronger
Storms**

**More Droughts
and Wildfires**

**Thawing
Permafrost**

**Damaged
Corals**

**Rising
Sea Level**

**Warmer
Oceans**

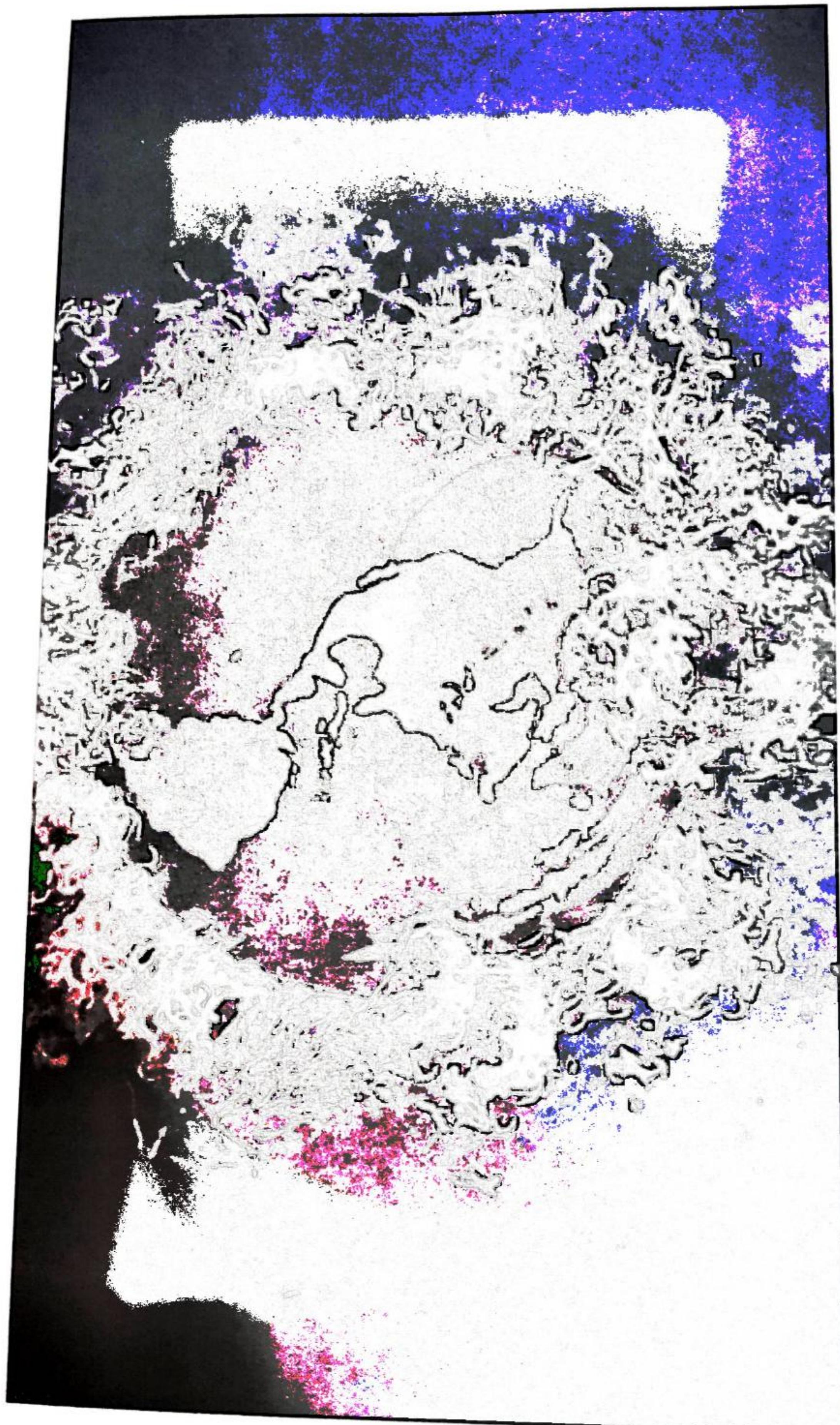
**Changes in
Plant Life Cycles**

 Share Image

कारण

स्त्रीलोभन वर्गिंग के कारण ही वाले जलवायु परिवर्तन के लिये शब्दरी अधिक जिम्मेदार ग्रीन हाउस गैश हैं। ग्रीन हाउस गैश, वे गैश ही हैं जो बाहर शे मिल रही गमी पा ऊपरा को अपने $\frac{0}{10}$ सौख लेती हैं। ग्रीन हाउस गैश का दूरवर्तमान सामाजिकः अत्यधिक सद्दूलाको गैं उन पौधों को गमि रखने के लिये किया जाता है जो अत्यधिक सद्दूलाको मौसम में बराबर ही जाते हैं। इसे में इन पौधों को काँच के दूक बंद घर में रखा जाता है ताकि काँच के घर में ग्रीन हाउस गैश भी दी जाती है। पर गैश खुला से आने वाली किसी की गमी सौख लेती है। सूरज से आने वाली किसी की गमी की कुछ मात्रा को पूर्ण दूरा सौख लिया जाता है। इस प्रक्रिया में दूरा पर्यावरण में कैली ग्रीन हाउस गैश का महत्वपूर्ण प्रभाव है। अमावस्या इन गैशों का वर्तमान से काफी कम होता है।

ग्रीन हाउस रोड में यहाँ सबसे ऊयाएँ महत्वपूर्ण ग्रीष्म कार्बन डाइऑक्साइड, जिसे हम नीचे प्राप्ति करने साथ के थाप उत्सर्जित करते हैं। पर्यावरण वैज्ञानिकों का कहना है कि पिछले कुछ वर्षों में पृथ्वी पर कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा लगातर बढ़ी है। वैज्ञानिकों द्वारा कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन अपार्टमेंट में गदरा समझदृश्य घतापा जाता है। अन्य 2006 में एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म आई-डी-एस रिपोर्ट में कहा गया है कि रबीउल वारिंग में 90 प्रतिशत प्रौद्योगिक मानवजनित कार्बन उत्सर्जन का है। जबकि श्री. यू.आर. राव अपने शोध के आधार पर कहा है कि रबीउल वारिंग में 40 प्रतिशत प्रौद्योगिक शिफ्ट कार्बन विकल्प का है। इसके 3 मोहावा कहे अल्प कार्बन विकल्प हैं। इनका उन पर शोध कार्बन में प्रौद्योगिक है अल्प जारी है।



घातक

परिणाम

मीन लाला गारा की नीस दीवी है
जी पूर्वी के तातावरण में प्रवेश कर
गद्दी का नापमान बढ़ाने में कारक
होती है। वैशाखिकी के अनुसार इब नीसी
का उत्सर्जन अगर इसी त्रिमि चला रहा
हो 21वीं शताब्दी में पूर्वी का नापमान
3 डिग्री से 8 डिग्री सीलिंगपथ तक
बढ़ सकता है। अगर ये यहाँ तक इसके
परिणाम बहुत घातक होती है। कुरिया की
कई हिस्सों में छिपी बर्फ की चावर पिंडा
जारी, समुद्र का जल स्तर कई फीट ऊपर
तक बढ़ जाएगा, भारी तबादी मध्यमी । पृष्ठ
तबादी की विश्वपृष्ठ पर निम्न (ट्रैटरोड),
की पूर्वी से दक्षिण की ओर दीवी वाली
तबादी से भी बढ़कर दीपी । दमारे गाड़
पूर्वी के लिए भी पृष्ठ उत्थान बहुत
घातक दीपी।

इलाही, प्री. शर्व के इस शोध के प्रभुव आदर
कालिक विभिन्ना और नियन्त्रण के बाबत
की विमापा - प्रक्रिया के लिए के आनंदः सम्बन्धी
पर कुछ वैज्ञानिकों द्वारा इस शोध की
किंवद्द अग्र तक अंतिक द्वे पुस्ती पर
आपत्ति ही है कालिक विभिन्ना और
प्रदेव पर विभिन्न स्वर के बाबत की विमापा
के आनंदः सम्बन्धी पर विष्ट के सभी
पर उन्होंने अपनी जड़ी द्वे इस पर मुद्दे
वास्तविक अनुसंधान संगठन (CERN) के लाज
के लाज के लाज के सहयोग से फैशनिक
विमापा द्वे पर प्रयोग के संपर्क करने का
बाद इस पर प्रयोग के संपर्क द्वे तक
और विकसित ही लकड़ी।



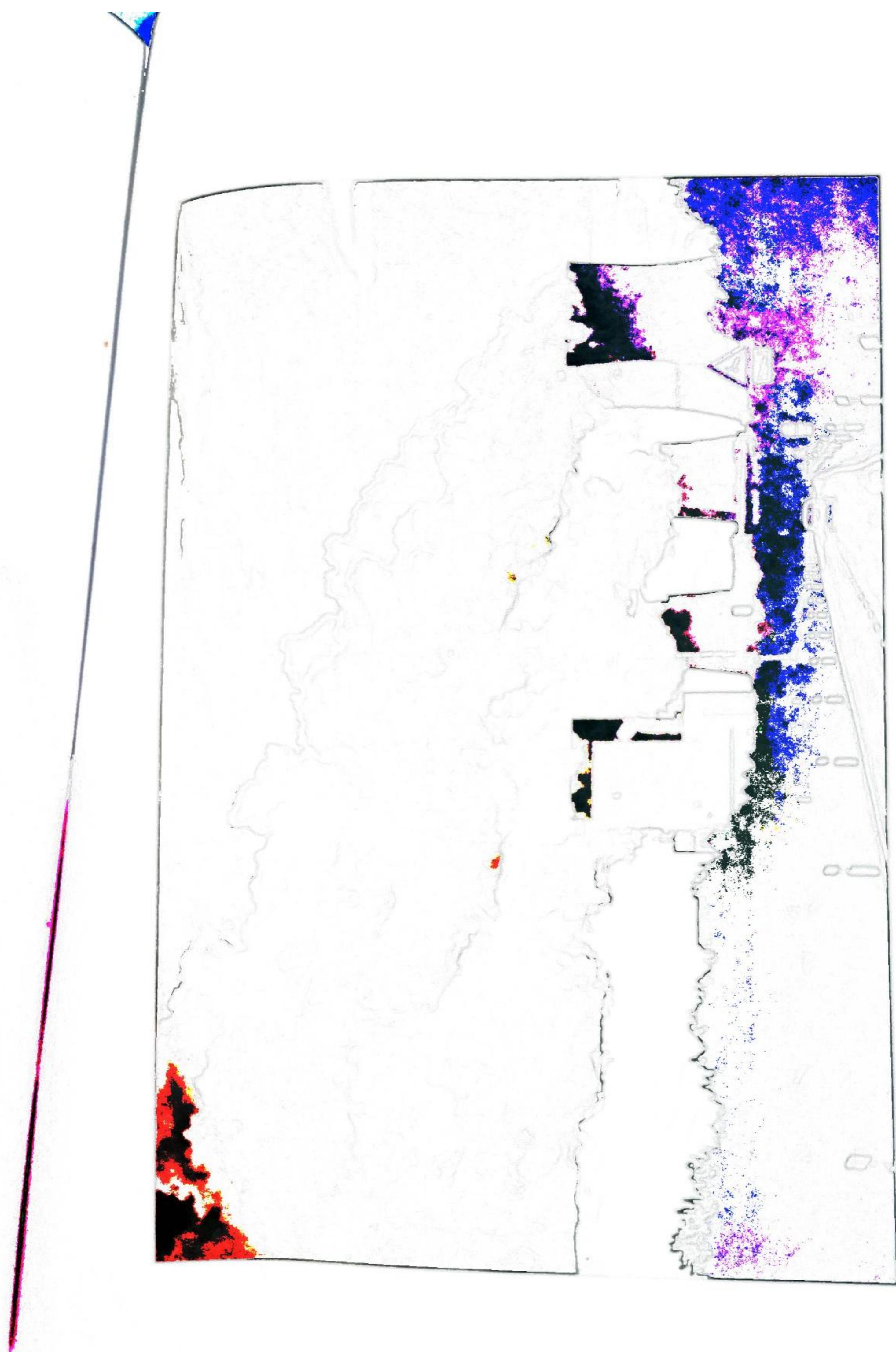
जागरूकता

हलीबन वार्षिक की शिक्षा का कोई हलाज
नहीं है। इसके बारे में सिफर जागरूकता की लाभ
है इससे जुड़ा तो सकता है। हम अपनी
पृथ्वी की जहाँ मापदंड में ग्रीव बढ़ाना।
अपने कार्बन डास्ट की जुटप्रिंट (प्रति दिन)
की कम करना दैवा।

हम अपने आख - पाख की वातावरण की प्रदूषण
से बचना चाहते हैं, इसके लिए, हम
में उत्तरी ही लड़ी मुमिना पृथ्वी की बचाव
हम पाइपलाइन की नियम है। दुनिया अब की
की लंगत इन की जड़ता है। दुनिया अब की
राजनीति रातियों तक जहाँ में उत्तरी
है कि गर्भीय धर्मी की लिए लिए दिलासा
है जहाँ। अधिकार
उनकी कड़ी जीवनाधार
शुद्ध यह मानवी हैं।
वार्षिक वही ही रही है,



नीतिन शर्म पद के उच्चारण की प्रैक्टिस की
मी जिमीनी ही, शुरापा शब्दों के । यह
इसके उच्चारण की प्रैक्टिस मी जिमीनी ही,
शुरापा शब्दों के । यह बहुत जारी रही।
नीतिन ही कई शब्दों
अमार हम शुरू करेंगे धरती की ओर
मी तुम अर प्राप्तान कर सकते हो ।



Scanned by TapScanner

रीन हाउस गीची का उत्सर्जन

माना जा रहा है कि इसकी वजह से उत्तराखण्ड में शिक्षिकाओं में नमी बढ़ी। मैदानी इलाकों में भी दूनी गामी पड़ी जिसकी कमी इतिहास में नहीं पड़ी। इस वजय से विभिन्न प्रकार की जानलेवा लीमिटेड पदों हो गी। हमें उपाय में शब्द दीगा कि हम प्रकृति की दृष्टि से बाधा न कर दें कि वह हमारे अधिकारों की ओर करवे पर ही आगामी ही जाए। हमें इस थेब गांवों का ध्यान रखना पड़ेगा।

आज हर घरि पर्वारणा की ओर करता है, प्रदुषण से लघाव के उपाय सौचता है। यहाँ खट्ट और प्रदुषण मुक्त पर्वारणा में रहने के अधिकारी के प्रति सज्जा होनी चाही दी जाए। अपने दायिताओं को में विद्यु गोलीबारी वापिस की समझनी चाही जाएगी। वर्तमान है। इस सबल का जवाब जावने की जिम्मेदारी विद्यु के अधिक दीर्घी में हुई है। विद्युति की विद्युति दोष प्रधारा और जीवों में उत्तराखण्ड का अनुभाव अपर्याप्त है।

कैलाने की रुपरेखा इसी तरह बनती
होती है उगाले दी जानी में धरती का
उपर्युक्त तापमान $0.3 \text{ }^{\circ}\text{C}$ परिवर्तन प्रति
घण्टा के दर से हो जाता है। जो विस्तारक है।

तापमान की इस उपर्युक्त विश्व के साथ
जीव-जंतु बैठाते ही जाती है $34.2 \text{ }^{\circ}\text{C}$
देखने लिए भी पड़ जाता है। पड़-पौधों में
भी इसी तरह का बदलाव आयता है। सामाजिक
आस-पास रहने वाली आबदी पर इसका अवसर
उपादा $34.2 \text{ }^{\circ}\text{C}$ पहुँचता है। जब इसके $34.2 \text{ }^{\circ}\text{C}$
के कारण $21.12 \text{ }^{\circ}\text{C}$ तक पर जाते हैं तो उपादान $21.22 \text{ }^{\circ}\text{C}$
होती है जागाये में समाज जाती है। इस ही में
कुछ वैशाखिक अवधारणा बताते हैं कि
जलवायु में विनाड़ का सिलसिला होता है।
जारी रहा हो $34.2 \text{ }^{\circ}\text{C}$ तक पौधा आज विषाणु जवित
शीर्घों से ही वाली गाँवों की संख्या में गारी
लड़ोतरी ही शक्ति है।